INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF HUMANITIES AND INTERDISCIPLINARY STUDIES
(Peer-reviewed, Refereed, Indexed & Open Access Journal)
DOI : 03.2021-11278686 ISSN : 2582-8568 IMPACT FACTOR : 7.560 (SJIF 2024)

वृद्धि और विकास में अधिगम: व्यक्तिक भिन्नता

(Learning in growth and development: Individual differences)

डॉ. अभिषेख कुमार पाण्डेय
सह आचार्य,
अपेक्स प्रोफेसनल यूनिवर्सिटी,
पासीघाट, अरुणाचल प्रदेश, भारत।

DOI No. 03.2021-11278686 **DOI Link ::** https://doi-ds.org/doilink/10.2024-98784694/IRJHIS2410014

सारांश :

एक समाज में विभिन्न तरह के विभिन्न व्यक्तियों में परस्परूप में भिन्नता का प्रदर्शन उसकी प्रकृति का स्वाभाविक दर्शन है। प्रकृति का यह स्वाभाविक गुण है की कोई भी दो या दो से अधिक व्यक्तियों के समूह में एक जैसा गुण नहीं होता है। अन्यथा संसार में किसी भी व्यक्ति की पहचान संभव नहीं है। प्रस्तुत लेख में लेखक द्वारा यह भी अध्ययन किया गया है कि क्या जो विभिन्नता पाया जाता है तो उनका परीक्षण भी संभव है। यदि है तो उसकी प्रकृति कैसी है। यदि मानव के विकासात्मक पहलुओं में विभिन्नता है तो उसका स्वरूप किस प्रकार है। इस लेख में इन सभी बिंदुओं पर चर्चा किया गया है।

मुख्य लेख बिंदु: *विभिन्नता, विभिन्नता का स्वरूप, प्रकार, स्वरूप, लक्षण, प्रभाव वाले कारण, विभेदी मापन & शैक्षिक निहितार्थ, निष्कर्ष।*

प्रस्तावना:

हमारे प्राकृतिक स्वरूप में दार्शनिक दृष्टिकोण से देखा जाए तो प्रकृति अपने अनुरूप अपना रंगरूप, आकार, स्वभाव और प्रवृत्ति निर्मित किया हुआ है और उसी के अनुरूप मानव का निर्माण भी किया है। यदि मानव के प्रकृति का एक जैसा निर्माण कर दिया गया होता तो संसार में किसी का पहचान और स्वरूप निर्धारित नहीं हो पाता। इन्ही को ध्यान में रखते हुए प्रकृति ने भी अपना नियम निर्धारित किया और उसी के अनुरूप मानव को एक स्वरूप प्रदान किया जिसका नाम है वैयक्तिक भिन्नता अर्थात विभेद अर्थात विभिन्नता जिसके आधार पर एक व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति से अलग और और उसकी उसके सापेक्ष पहचान बन सके। संसार में व्यक्ति में विभेद होना एक स्वभाव और मानव प्रकृति का एक स्वाभाविक देन है। संसार में एक व्यक्ति पूर्वरूपेण एक जैसा नहीं होता है और वह एक दूसरे से किसी न किसी आधार पर अलग और कुछ न कुछ अंतर प्राप्त किया होता है। यहीं नहीं एक माता पिता की दो संतान भी आपस में एक दूसरे से भिन्न होते जब कि वे एक माता पिता के क्रोमोसोम से निर्धारित हुए होते है, और इन्ही अंतर के वजह से इनको अगले पीढ़ी का भविष्य भी माना जाता है और इनके अंदर हुए शारीरिक, मानसिक, नैतिक, बौद्धिक, सृजनशीलता और संवेगात्मक दृष्टि से अंतर का भाव स्पष्ट रूप से प्रत्यक्ष प्रदर्शित होता है। इसी सभी विशेषताओं को मनोविज्ञान के भाषा में वैयक्तिक विभिन्नता कहते है। प्रस्तुत अध्याय में इन्ही वैयक्तिक विभिन्नता और इनके

शैक्षिक निहितार्थ पर चर्चा किया गया है।

वैयक्तिक विभेद/विभिन्नता:

जब हम किसी व्यक्ति या स्वयं की बात करते है तो एक दूसरे के विषय में व्यक्ति की वृद्धि और विकास के विभिन्न पहलुओं पर जरूर विचार करते है। विचार करते समय मस्तिष्क यह बात जरूर दिखाई देता है कि मेरे सामने वाला व्यक्ति हमसे कितना बड़ा है, कितने कितना गोरा है, कितना स्मार्ट है, तरह तरह के प्रश्न आते है और प्रश्न स्वयं में भिन्नता को प्रदर्शित करता है। इसी भिन्नता को मनोविज्ञान के भाषा में वैक्तिक विभिन्नता कहते है, जिसका अध्ययन ही इस अध्याय का अहम उद्देश्य है। अध्ययन के समय लेखक के मस्तिष्क में दो प्रमुख बातें ध्यान में अवश्य आती है- जैसे,

1. हम सभी व्यक्तियों में समानता के कुछ न कुछ अवश्य ऐसे तत्व है जो हम सभी में समान रूप से विकासात्मक प्रारूप का अनुसरण करते हैं।
2. यहां पर यह भी देखा गया है कि प्रत्येक व्यक्ति विभित्रता की ओर उन्मुख और अग्रसर रहता है जिसके कारण हमारे अंदर शारीरिक संरचना, मानसिक क्षमताएं, संवेगात्मक, नैतिक, संज्ञानात्मक और व्यक्तित्व के प्रमुख ट्रैट्स-शिलगुण प्रत्यक्ष प्रदर्शित होने लगते हैं।

यहां पर इन दिनों बिंदु का अध्ययन करने पर हमे यह संकेत देते है कि कुछ ऐसे तत्व ऐसे भी है जो मनुष्य के रूप में समानता प्रदान करते है जबकि हमलोग जैसे; व्यक्ति इन विशेषताओं या चरों (Variables) की विभिन्न मात्रा को आधार मानकर जोड़े हुए है, ये भिन्नता के एक लक्षण बनाए रखे हुए है, और इन्ही सभी विभिन्नता को वैक्तिक विभिन्नता का मात्रात्मक पैमाना भी माना जाता है। व्यक्तित्व के इस मात्रात्मक विभिन्नता का मित्रता पर टिप्पणी करते हुए मनोवैज्ञानिक प्रोफेसर स्कीनफेल्ड (Scheinfeld) ने अपने शब्दों में सही ही बोला है, कि "विश्व के समस्त इतिहास में आप जैसा न कभी कोई था और आने वाले समय की असीम अनन्तता में, आप जैसा न कोई होगा।" भिन्नता प्रकृति का स्वाभाविक गुण है। प्रकृति की किन्हीं दो वस्तुओं में पूर्ण समानता नहीं पायी जाती है। यह असमानता ही वैयक्तिक विभिन्नता का प्रदर्शन है।

वैयक्तिक विभेद का इतिहास:

प्राचीन काल से मानव जाति में उनका विभेदीकरण कर दिया गया था। मानव जाति के इतिहास में व्यक्ति के विभेद का का इतिहास भी प्राचीन रहा है। उस समय भी व्यक्तियों में उनके शारीरिक योग्यताओं और समर्थ के आधार पर उनका वर्गीकरण किया गया था। उनको उनके मानसिक सामर्थ्य और मानसिक योग्यता के आधार पर ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र का दर्जा प्राप्त हुआ करता था। उसी आधार पर उनके परस्पर रूप में भिन्नता का भाव दिखाई देता था। परंतु उस समय कोई ऐसा मानक मापन नहीं बना था जिसके आधार पर उनका वर्गीकरण किया जा सके। भारतीय मनोविज्ञान में जो भी वर्गीकरण था वह सिर्फ अनुमान और व्यवहारिक प्रक्षेपण के आधार ही हुआ करता था। जो भी विधियां निर्धारित हुआ करता था वह अप्रमाणिक हुआ करता था। फिर धीरे आधुनिक मनोविज्ञान का विस्तार होना प्रारंभ हुआ और लोगो में जागरूकता पनपने लगा। धीरे धीरे मनोवैज्ञानिक परीक्षण का निर्माण होने लगा और उस परीक्षण से सार्थक अनुमान भी आना प्रारंभ हो गया। इसी क्रम में वर्ष 1796 ई. में ग्रीनविच एस्ट्रानोनिकल प्रयोगशाला(वैधशाला) के एक मनोविज्ञान का अधिकारी को इसलिए पदच्युत अर्थात नौकरी से निकाल दिया गया था कि उसके कार्य करने की यथार्थता अन्य कर्मचारियों के कार्य से अर्थात उसका प्रेक्षण (Observation) अन्य साथियों के प्रेक्षण से भित्र थे। उसके बाद यह अनुसंधान का क्रम थमने वाला नही था। पुनः सन् 1816 में एक खगोलश (Astronomer) के एक खगोलशास्त्री ने भी सर्वप्रथम यह सिद्ध करने का प्रयास किया कि व्यक्तियों में निरीक्षण करने में वैयक्तिक

भेद का गुण पाया जाता है। उनका यह शोध वैयक्तिक विभिन्नता को एक नया आधार प्रदान किया और उसी क्रम सर्वप्रथम सर फ्रांसीसी गाल्टन (Galton) ने सन् 1869 में अपनी पुस्तक 'हेरीडिटरी जीनियस' (Hereditary Gerdus) लिखी जिसमें वैयक्तिक भेद या विभिन्नता का वैज्ञानिक ढंग से विवेचन किया। तभी से लोगों का ध्यान वैयक्तिक विभेदों की ओर ध्यान आकर्षित होने लगा। फिर बीसवीं साताब्दी में पियर्शन, कैटल, टेरमैन जैसे आधुनिक मनोवैज्ञानिकों ने वैयक्तिक विभेद पर अपना अपना अध्ययन किया और विचार व्यक्त किया। जिसका प्रभाव यह हुआ कि इस पर सदैव अध्ययन होता आ रहा है।

वैयक्तिक विभेद का अर्थ:

व्यक्तिक विभेद से तात्पर्य किशोर किशोरियों के शारीरिक गठन, शारीरिक रंग रूप, उनके बुद्धि, उनके क्षेत्र विशेष में रुचि, उनका स्वभाव, उनका व्यक्तित्व और भावनात्मक गुणों के आधार पर यह दिखाई देता है कि किशोर किशोरी बालकों में परस्पर रूप से एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से भिन्न भिन्न तरह से पाया जाता है। यह भिन्नता बालक में विभेद को महत्वपूर्ण स्थान प्रदान करता है। व्यक्तिक विभदों की बालक के विकास में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान और भूमिका परिलक्षित होती है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि बालकों की बुद्धि, रुचि, योग्यता और विवेक के आधार पर उनमें विकास के अवसर सर्वोत्तम स्तर पर प्राप्त हो सकता है। वैयक्तिक भेद पर समग्र दृष्टि से अध्ययन किया जाए तो यह स्पष्ट रूप से हम कह सकते हैं कि प्रकृति ने विभिन्नता का जो स्वरूप निर्धारण किया है वह मानव जीवन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण निर्धारक तत्व है। समग्र रूप से जब हम सभी बातों को पढ़ लेते हैं तो यह विचार करने पर एकदम स्पष्ट हो जाता है कि मानव विकास का व्यक्तिक विभेद का यह सम्प्रत्यय मात्रात्मक (Quantitative) विशेषता है न कि गुणात्मक (Qualitative) विशेषता है। अतः हम आधिकारिक रूप से यह उद्घोष कर सकते हैं कि मानव में जो विभिन्नताएं पाई जाती हैं वह प्रमाणिक रूप से यथार्थ है। मनोविज्ञान का वह क्षेत्र जिसमें मानव के विकास का मात्रात्मक भित्रता या भेद का अध्ययन किया जाता है उसे ही वैयक्तिक भिन्त्रता का मनोविज्ञान कहते है। वैयक्तिक भित्रता के क्षेत्र में हुए अनेकों अध्ययनों ने इस प्रकार के प्रचलित मतों का खंडन करते हुए यह स्पष्ट किया है कि मानव प्रजाति में सुनिश्चित और स्वाभाविक रीतियों से सुनिश्चित विभेद के प्रकारों (Types) जिनमें यह स्पष्टरूप में अन्तर दिखाई देते हैं, और उनका वर्गीकरण भी आसानी से किया जा सकता हैं। हमारे समाज में इस प्रकार के अभी गलत अवधारणा है कि व्यक्ति यांत्रिक बुद्धि का नहीं है तो वह स्वाभाविक बुद्धि का भी नहीं होगा। तो वह बुद्धिमान होगा। इस आधार पर मनोविज्ञान के अनुसार यह द्विपक्षीय वर्गीकरण अर्थविहीन त्रुटिपूर्ण मान्यता है। मानव का यह गुण कहीं भी परिभाषित कर सकता है कि मानवीय विभिन्नता मानव का गुण है।

वैयक्तिक विभिन्नता की परिभाषा:

व्यक्तिक विभेद या विभिन्नता का अर्थ एक व्यक्ति जब दूसरेव्यक्ति से रंग रूप, शारीरिक गठन, बुद्धि, विशिष्ट योग्यताओं, रुचियों, उपलब्धियां के आधार पर, उनके स्वभाव, उनके व्यक्तित्व गुणों के आधार पर परस्पर रूप से भिन्न-भिन्न रूप में दिखाई देते हैं तो हम यह कह सकते हैं कि कोई भी दो व्यक्ति शारीरिक गठन, बुद्धि रुचि, स्वभाव और व्यक्तित्व के गुणों इत्यादि में समान रूप से नहीं पाए जाते हैं। अर्थात व्यक्तियों में जिन बातों में विभिन्नता पाई जाती है उन बातों के आधार पर व्यक्तिक विभेद में मुख्यतः तीन प्रकार के भिन्नताएं हो सकते हैं: शारीरिक भिन्नताएं, मानसिक भिन्नताएं और व्यक्तित्व संबंधी विभिन्नताएं पाई जाती है। मानव प्रजाति मैं विभिन्न तरह की विभिन्नताओं का अध्ययन करने के उपरांत आधुनिक मनोविज्ञान के क्षेत्र में मनोवैज्ञानिकों ने अपने-अपने तरीके से व्यक्तिक विभिन्नता को परिभाषित करने का प्रयास किया है जिसको आगे उल्लेख किया जा रहा है।

स्केनर ने व्यक्तिक विभिन्नता को अपने शब्दों में इस प्रकार परिभाषित किया है कि *"मापन किए जाने वाला व्यक्तित्व का प्रत्येक*

पहलू व्यक्तिक भिन्नता का अंश है।"

टायलर ने व्यक्तिक विभिन्नता को अपने शब्दों में इस प्रकार परिभाषित करने का प्रयास किया है *"शरीर के आकार और रूप शारीरिक कार्य, गति की क्षमताओं, बुद्धि, उपलब्धि, ज्ञान, रुचियां अभिवृत्तियों और व्यक्तित्व के लक्षणों में मापी जाने वाली भिन्नताओं का अस्तित्व सिद्ध हो चुका है।"*

इसी क्रम में जेम्स ड्राइवर भी कहते हैं कि *"औसत समूह से मानसिक शारीरिक विशेषताओं के संदर्भ में समूह के सदस्य रूप में भिन्नता या अंतर को व्यक्तिक भेद कहते हैं."*

उपर्युक्त परिभाषाओं का अध्ययन के उपरांत सभी तथ्यों के आधार से यह स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि किसी भी बालक के शारीरिक, भावात्मक, मानसिक और क्रियात्मक मानव की विशेषताओं में वैयक्तिक भिन्त्रतायें स्वयं प्रगट होती हैं। इनके अंतर्गत वैयक्तिक भिन्नताओं का क्षेत्र उतना ही विस्तृत और बृहद है जितने व्यक्ति इस संसार में रहते हैं।

व्यैक्तिक विभिन्नता के रूप:

व्यक्तिक भिन्नताओं का पूर्व में अध्ययन के दौरान यह स्पष्ट रूप से गहराई पर सोचने पर यह निकल के आता है कि व्यक्तिक विभिन्नता के दो रूप होते हैं।

अंत: वैयक्तिक विभिन्नता:

जब एक व्यक्ति अपने जीवन में घटित होने वाले वृद्धि और विकास पर अध्ययन करता है और स्वयं अपने शारीरिक मानसिक भावात्मक क्रियात्मक व्यावहारिक आयामों पर स्व अध्ययन करता है तो यह प्राप्त करता है कि उनके इन आयाम में अनेक विभिन्नताएं घटित हो चुकी हैं। इस प्रकार प्राप्त विभिन्नताएं अंत: व्यक्तिक विभिन्नताएं कहलाते हैं। आप सभी लोग जानते हैं कि पहले आप शिशु के रूप में जन्म लिए उसके बाद आप बाल्यावस्था में प्रवेश किया फिर किशोर किशोरी और उसके बाद युवावस्था में प्रवेश किया। यह अवस्था भी आपको दो प्रकार के विभिन्नताओं में परिवर्तित हो जाता है, पुरुष और महिला वर्ग। साथ ही साथ यह भी देखा जाता है कि भावनात्मक दृष्टि से अपने आप को सर्वथा एक स्थिति में नहीं रहते है अर्थात अवस्थित नही रहते हैं। कभी आप प्रसन्न रहते हैं कभी आप अप्रसन्न तो कभी आप तटस्थ तो कभी पक्षपात भाव में होते है। कभी आप क्रोध के मुद्रा में होते है तो कभी आप प्रसन्नता तो कभी द्वेष से भरे होते है। यह भिन्नता आपके अंदर में अंत: व्यक्तिक भिन्नता के रूप में परिलक्षित होता है। इसी क्रम में जमा आगे विचार करते हैं तो यह समझ में आता है कि हमारी रुचिया अभिवृत्तियां अभिप्रेरणा और जीवन मूल्य जो सदैव परिवर्तनशील रहते हैं कभी तटस्थ एक भाव में नहीं रहते हैं। हम शैक्षिक जीवन की भाव को देखें तो शैक्षिक क्षेत्र में भी कभी हम उच्च उपलब्धि में कभी मध्य उपलब्धि में तो कभी सुन्नता के भाव में भी अपने आप को पाते हैं।

अंतर वैयक्तिक भिन्नता:

इस व्यक्तिगत भिन्नता के अंतर्गत समाज का एक व्यक्ति अपने परिवार समाज में अपने शारीरिक भावनात्मक मानसिक और क्रियात्मक पक्षों में जब किसी दूसरे व्यक्ति से अपनी तुलना करता है तो तुलना के इस क्षेत्र के आधार पर व्याप्त भिन्नता, अंतरवैयक्तिक भिन्नता कहलाता है। हम अक्सर अपने सामने वाले प्राणी में रंग रूप उनके कद काठी उनकी मानसिक क्षमताओं उनके भावात्मक पशुओं और उनके क्रियात्मक कौशलों और उपलब्धियां के आधार पर स्वयं से तुलना करते हैं और देखते हैं और समझते हैं की उनमें और हमारे में कितना और किस प्रकार का विभेदात्मक गुण प्रकट होता है। जिससे हम अपने व्यवहारी के जीवन में सुधार करने का भाव भी रखते हैं। वैसे

तो अक्सर मानव यही सोचता रहता है कि वह दूसरों की तुलना में कितना बलवान, कितना धनवान, कितना क्षमतावान, कितना विद्वान, कितना मूल्यवान, कितना बुद्धिमान, कितना सृजनशील, कितना विवेकशील है और तो और अपने को सुंदरता के क्षेत्र में भी मापता है। यह प्रतिस्पर्धा व्यक्ति को एक स्थान भी प्राप्त करने में सहयोग करता है लेकिन जब वह सकारात्मक भाव से इस पर तुलना करता हो।

अतः दोनों रूपों या गुणों के आधार पर जब हम वर्तमान भारतीय शिक्षा प्रणाली के अंतर्गत अंत: वैयक्तिक भिन्नता और अन्तरवैयक्तिक भिन्नता पर तुलनात्मक अध्ययन किया गया तो यह देखा गया कि भारतीय शिक्षा प्रणाली अंत: वैयक्तिक भिन्नता की तुलना में अंतरवैक्तिक भिन्नता पर अधिक बल देता है। क्योंकि शिक्षा प्रणाली इस व्यक्तिगत तुलना के माध्यम से विद्यार्थियों के समस्त शैक्षिक उपलब्धि का परीक्षण मूल्यांकनव प्रमाण सरलता से कर सकता है। परिणाम स्वरूप इस प्रकार के शिक्षा प्रणाली अत्यधिक प्रतिस्पर्धा को प्रस्तुत करता है। जिससे विद्यार्थियों में शैक्षिक विकास की संभावना बढ़ जाती है। यह शैक्षिक विकास उनके भविष्य का निर्माण करता है। अतः शिक्षा प्रणाली के अंतर्गत व्यक्ति में अंतरवैयक्तिक भिन्नता की तुलना का अध्ययन सर्वथा करना चाहिए।

व्यक्तिक भिन्नता के प्रकार:

मानव वृद्धि और विकास पर हुए अध्ययनो, विचारों और तुलनात्मक स्वरूपों के आधार पर जो भिन्नता पाई गई उसे भिन्नता के आधार पर व्यक्ति विभेद को मुख्यत: तीन प्रकार में बांटा जा सकता है।

शारीरिक भिन्नतायें:

यह वह भिन्नता है जिसके लिए हम बालक के विकास का अध्ययन करते हैं, तो विकास के दौरान हम उनके शारीरिक गुणों जैसे रंग रूप, शारीरिक गठन, लंबाई, भार और लिंग भेद पर अवलोकन करते है, तो यह पाते है कि कुछ व्यक्ति शारीरिक से लंबे है, तो कुछ व्यक्ति शारीरिक रूप से नाटे है, तो कुछ व्यक्ति शारीरिक से औसत लंबाई के है। कुछ व्यक्ति देखने कद के होते हैं, कुछ व्यक्ति मोटे होते हैं, कुछ व्यक्ति दुबलेहोते हैं, तो कुछ व्यक्ति गोरे होते हैं, तो कुछ व्यक्ति काले होते हैं, तो कुछ व्यक्ति गंदे स्वरूप के होते हैं, कुछ व्यक्ति सुंदरहोते हैं, कुछ व्यक्ति स्मार्ट होते हैं, तो कुछ व्यक्ति बहुत भोंदू टाइप के होते हैं। तो इस प्रकार के अध्ययन के आधार पर हम कह सकते हैं कि बालक में शारीरिक भिन्नताएं भी होता है। अतः शारीरिक भिन्नता की अंतर्गत विभिन्न व्यक्ति रंग रूप, शारीरिक गठन, लंबाई, भार, लिंग भेद, आदि में भिन्न-भिन्न रूप में होते हैं।

मानसिक भिन्नतायें:

मानसिक विभिन्नताओं के अंतर्गत विभिन्न व्यक्ति मानसिक गुणों में भी भिन्न-भिन्न रूप में होते है। व्यक्तियों में बुद्धि, रुचि, स्मरण शक्ति जैसे मानसिक गुणों में विभेद पाया जाता है। इन विभेदों के आधार पर उनको मानसिक भिन्नता वाले व्यक्ति के वर्ग में रखा जाता है। जैसे कुछ व्यक्ति प्रतिभाशाली होते हैं तो कुछ व्यक्ति मूर्ख और अनपढ़ वर्ग के होते हैं। कुछ व्यक्ति पढ़ने में तेज हैं तो कुछ व्यक्ति पढ़ने में एकदम गधे हैं। कुछ व्यक्ति कितना भी पढ़ा दो उनको समझ में नहीं आता है और कुछ बच्चे एक बार किसी व्यक्ति के जीवन पर एक बार समझा देने पर तुरंतसमझ हा जाते हैं और कुछ बच्चे औसत स्तर पर समझ रखते हैं। कुछ बच्चे सुनी ही बातों को दीर्घकाल तक स्मरण में रखते हैं तो कुछ बच्चे कुछ समय तक स्मरण में रखें रहते है। तो कुछ बच्चे शीघ्र ही सुनी ही बातों को भूल जाते हैं।

व्यक्तित्व संबंधी भिन्नता:

व्यक्तित्व भिन्नता की अंतर्गत विभिन्न व्यक्तियों का व्यक्तित्व विभिन्न टाइप का होता है। इसके अंतर्गत कुछ व्यक्ति अंतर्मुखीगुणों से संपन्न होते हैं तो कुछ व्यक्ति बहिर्मुखी गुणों से संपन्न होते हैं। इस प्रकार के विभिन्न भिन्नताओं से संबंधितव्यक्ति नम्र स्वभाव के होते हैं

तो कभी कुछ व्यक्ति उग्र स्वभाव के होते हैं तो यही नहीं कुछ व्यक्ति हंसमुख, प्रसन्नचित दिखाई देते हैं तो वहीं दूसरेतरफ कुछ व्यक्ति उधर व कठोर दिखाई देते हैं।

वैयक्तिक भिन्नता के क्षेत्र:

प्रकृति के अनुसरण में व्यक्ति की अद्वितीय वंशानुक्रमीयनिधियों और उसके निराले और हरियाए वातावरण में प्रकृति और पुरुष की अन्तः क्रियाओं के फलस्वरूप व्यक्ति में वैयक्तिक भिन्नताएँ जन्म लेती हैं। भिन्न भिन्न वंशानुक्रम, अपरिमित पर्यावरणीय कारकों की आपसी संकियाओं के फलस्वरूप निर्मित वैयक्तिक भिन्नता का विस्तृत क्षेत्र भी अपने आप में असीम रूप ग्रहण करलेता है। इस असीम अनुक्रिया के फलस्वरूप और मोटे तौर पर उसे समझने के लिए हम वैयक्तिक विभिन्नताओं को तीन शीर्षकों में विभक्त कर सकते हैं जिनका विवरण साथ में संलग्न है।

संज्ञानात्मक क्षेत्र की वैयक्तिक विभिन्नताएं:

सज्ञानात्मक क्षेत्र के वैयक्तिक भित्रताओं का भी 4 भागों में वर्गीकरण किया गया है-

(क) बुद्धि

(घ) अभिक्षमताएँ

(ग) सृजनशीलता

(घ) शैक्षिक उपलब्धि

भावात्मक क्षेत्र की भिन्नताएँ:

भावात्मक क्षेत्र की वैयक्तिक भिन्नताओं को भी ८ भागों में वर्गीकरण किया गया है।

(क) रुचि

(ख) अभिवृत्ति

(ग) जीवन मूल्य

(घ) अभिप्रेरणा

(ङ) जात्म सम्मान

(च) संवेगात्मक स्थिरता

(छ) स्वभाव

(ज) व्यक्तित्व के विशेषक

मनोपेशीय क्षेत्र की मित्रताएँ:

मनोपेशीय क्षेत्र की वैयक्तिक भित्रताओं के प्रमुख उपक्षेत्र ३ है-

(क) शारीरिक

(ख) शारीरिक सहनशक्ति

(ग) मनोपेशीय कौशल

वैयक्तिक विभिन्नता के कारण :

हमारे समाज में मौजूद व्यक्तियों में विभिन्नताओं के आने का कोई न कोई जरूर कारण होता है यह कारण प्रकृति द्वारा निर्मित हो या मानव द्वारा प्रभावित हो। यहां हम ऐसे कारणों पर अध्ययन करेंगे जो वैयक्तिक विभिन्नता को बतलाता है।

1. **अनुवांशिकता** हमारे समाज में बालक और बालिकाओं की व्यक्तिगत विभिन्नताओं का सबसे बड़ा कारण अनुवांशिकता है। यह अनुवांशिकता बच्चों को उनके माता-पिता के द्वारा प्राप्त होता है। मनोविज्ञान कहता है कि मां-बाप के द्वारा प्राप्त क्रोमो उनके विकास का निर्धारण करता है, और यह विकास उनमें व्यक्तिक विभिन्नता को जागृत करता है। मनोविज्ञान के क्षेत्र में डाल्टन पर्सन टर्मिनस जैसे मनोवैज्ञानिकों ने अपने शोध अध्ययनों में या सिद्ध कर दिया है कि अनेक शारीरिक मानसिक और व्यक्तित्व संबंधी नेताओं के लिए बालक बालिकाओं का वंशानुक्रम काफी सीमा तक उत्तरदाई होता है। किसी बालक को वंशानुक्रम में अपने माता-पिता से क्या क्या गुण मिलेंगे यह केवल उनके माता-पिता के सहयोग पर निर्भर करता है। माता-पिता के सहयोग के दौरान प्राप्त होने वाले गुणसूत्रकी संख्या भिन्न-भिन्न समूचे होने के कारण एक ही माता-पिता की संतानों में परस्पर भिन्नताएं पाई जाती है।
2. **पर्यावरण**: व्यक्तिगत विभिन्नता पर बालक के आसपास का वातावरण भी प्रभाव डालता है। वैसे तो वातावरण कई प्रकार का होता है जैसे भौगोलिक वातावरण, सामाजिक वातावरण और सांस्कृतिक वातावरण। आप जैसे व्यक्ति जिस तरह के वातावरण में रहता है उसी के अनुरूप उनका शारीरिक विकास होता है, उनका मानसिक विकास होता है, उनका संवेगात्मक विकास होता है, उनका चरित्र का विकास होता है। जैसे पासीघाट एक ठंडा और शुष्क वातावरण का क्षेत्र है जहां पर चारों तरफ पहाड़ जंगल बाग बगीचे मौजूद हैं तो यहां के बच्चे भी उसी का रूप जन्म लेते हैं| उसी के अनुरूप उनका विकास होता है। यहां की भाषा शैली, रहन-सहन, खान-पीन, अशिक्षित परिवारों का स्वभाव, शिक्षित परिवारों का स्वभाव बच्चों का उसी के रूप विकास करता है। इन व्यक्तियों में बच्चों में बालकों में वातावरण के द्वारा आ रहे अंतर से उनमे शारीरिक भिन्नताएं, मानसिक भिन्नताएं और संवेगात्मक विभिन्नताएं दिखाई देती है।
3. **परिपक्वता**: परिपक्वता अर्थात पाक जाना। परिपक्वता का संबंध व्यक्ति की आयु से होता है| भिन्न-भिन्न आयु के बच्चे भिन्न-भिन्न दृष्टि से शारीरिक रूप से मानसिक रूप से परिपक्वता को प्राप्त करते हैं। और यह परिपक्वता उन बालकों में व्यक्तिगत रूप से विभेद भी लाता है।
4. **बुद्धि:** बालक के व्यक्तिक भिन्नता का एक प्रमुख कारण बुद्धि भी है। क्योंकि एक समूह में दो बालक का बुद्धि एक जैसा नहीं होता है। कोई पढ़ने में तेज होता है कोई कमजोर होता है। बुद्धि विवेक के आधार पर व्यक्तिगत विभेद उत्पत्ति होती है।
5. **लैंगिक विभेद:** लैंगिक विभेद एक बहुत बड़ा कारण है व्यक्तिगत विभिन्नता का। समाज में व्याप्त लैंगिक भिन्नता लोगों के बीच में महिला वर्ग और पुरुष वर्ग का विभाजन करना भी एक तरह से लैंगिक व्यक्ति का विभेद का उदाहरण होता है।
6. **स्वास्थ्य:** कहते हैं कि जैसा स्वस्थ रहेगा वैसा विकास होगा| अतः एक अच्छा स्वस्थ व्यक्ति और एक अस्वस्थ व्यक्ति दोनों की विकासात्मक पहलुओं में बहुत अंतर होता है। यह अंतर उनके अंदर व्यक्तिगत विभेद का कारण बनता है।
7. **पारिवारिक स्थिति:** पारिवारिक स्थिति भी व्यक्तिगत विभेद का बहुत बड़ा कारण होता है। एक उच्च सामाजिक आर्थिक स्थिति का बालक का बौद्धिक सामाजिक, नैतिक, शारीरिक विकास निम्न सामाजिक आर्थिक स्थिति के बच्चों के विकास से और मध्यम

सामाजिक आर्थिक स्थिति के बालक के विकास से बहुत अंतर होता है यह अंतर उनके अंदर व्यक्तिगत भिन्नता का कारण बनता है।

8. **जाति और प्रजाति:** समाज में जाति और प्रजाति का भी बालक के विकास पर प्रभाव पड़ता है। उच्च सामाजिक जाति का व्यक्ति अपने से निम्न जाति और प्रजाति के बच्चे से अलग भाव से विचार रखता है। यह विचार उनके अंदर व्यक्तिगत भिन्नता का निर्माण करता है जिससे यह भिन्नता प्रबल हो जाता है। इस तरह से निम्न जाति का बच्चा अपने से उच्च जाति के बच्चे से अपने आप को कमजोर मानता है जिसके वजह से उसका सामाजिक नैतिक मानसिक विकास प्रभावित होता है। उनके बीच एक भेदभाव जैसा अंतराल होने की वजह से उनका विकासात्मक पहलू भी भिन्न हो जाता है। यह भिन्नता व्यक्तिगत विभिन्नता का उदाहरण है। अक्सर देखा जाता है कि एक उच्च जाति जैसे क्षत्रिय ब्राह्मण का बच्चा साहसी ज्ञानी होता है जबकि वैश्य और शूद्र का बच्चा व्यापार में और सेवा में प्रबल होता है। यह अपने-अपने क्षेत्र की प्रबलता उनके अंदर शैक्षिक दृष्टि से उनसे व्यक्ति की भिन्नता का भी उदाहरण बनता है।

व्यक्तिक विभिन्नता की विशेषताएं:

1. **प्रसरण**: जब हम किसी शारीरिक और मानसिक गुणों को आधार मानकर किसी समूह विशेष का मापन करते हैं तो हमें पता चलता है कि उसे गुणों का प्रसारण समूह में उपस्थित है भिन्न-भिन्न सदस्यों में भिन्न-भिन्न मात्रा में प्राप्त होता है और यह मापन अध्यापक के लिए महत्वपूर्ण होता है| अध्यापक को इसका अध्ययन हमेशा करना चाहिए|
2. **प्रसमान्यता**: जब एक शोधकर्ता किसी समूह विशेष के गुण या विशेषज्ञ का मापन करता है तब प्राप्त वितरण अक्षर पर समानता के लिए होता है| अर्थात हम कह सकते हैं कि वितरण का वक्र घंटी नुमा होता है। अर्थात प्रसन्नता का अध्ययन अध्यापक के शिक्षण कार्य में सुधार के लिए एक अच्छा अवसर हो सकता है| अतः अध्यापक को चाहिए कि वह पर सामान्य का पाठ अन्य अध्यापकों को करना चाहिए।
3. **गति विविधता**: गति विविधता मानव समाज में व्यक्तिगत विभिन्नता लाने का एक बहुत बड़ा उदाहरण है क्योंकि इस गुण के कारण बालक के संदर्भ में व्यक्ति व्यक्ति में भिन्न-भिन्न होते हैं जैसे स्वयं एक व्यक्ति में भी विभिन्न विशेषकों के विकास की गति भिन्न होती है|
4. परस्पर संबंध: व्यक्तिगत विभिन्नता के अंतर्गत व्यक्ति में विशेषताएं परस्पर रूप से संबंधित होती है और इसका साक्ष्य यह है कि यदि कोई बालक है शारीरिक रूप से स्वस्थ है तो निश्चित तौर पर वह मानसिक रूप से भी स्वस्थ होगा और जब मानसिक रूप से स्वस्थ है तो वह शैक्षिक योग्यता को सही रूप से प्राप्त कर सकता है। अर्थात एक उपलब्धि के लिए बालक में मानसिक विकास होना जरूरी है और मानसिक विकास होने के लिए बालक का शारीरिक स्वास्थ्य भी होना जरूरी है अतः व्यक्ति में व्यक्तिगत रूप से प्राप्त विशेषताएं आपस में परस्पर से संबंधित होती है। अर्थात किसी एक विशेषता में परिवर्तन दूसरी विशेषता को प्रभावित करती है।

व्यक्तिगत विभिन्नता के विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए शिक्षा के क्षेत्र में अध्यापक अपने छात्रों के हित में कुछ ऐसे अवसर प्रदान करना चाहता है। जिससे उनका समुचित और अधिकतम विकास हो सके, क्योंकि आधुनिक मनोविज्ञान कहता है कि शिक्षा का केंद्र बालक है, और बालक के विकास की कुंजी उसकी व्यक्तिक भिन्नता है और इस व्यक्तिक भिन्नता की गहरी समझ है। अतः बालक केंद्रीत शिक्षा को

यथार्थ रूप से उर्वरा भूमि पर सकारात्मक एवं मनवांछित प्रतिफल प्राप्त करने के लिए व्यक्तिगत विभिन्नता को पोषित करना और प्रोत्साहित करना ही होगा।

इस संदर्भ में बालक के व्यक्तिगत विभिन्नता का पोषण करने के लिए विद्यालय प्रणाली विद्यालय अंतर्गत अध्यापक कुछ महत्वपूर्ण कथनों का अनुसरण करता है:–

1. अध्यापक का कार्य होता है कि प्रत्येक छात्र की योग्यता को पहचाने और उसे योग्यता के अनुरूप उसके स्तर का निर्धारण करें.
2. अध्यापक का यह भी कार्य है कि कक्षा में उपस्थित छात्रों में से कुछ उन विशिष्ट योग्यता और अभिक्षमता वाले छात्रों की पहचान करें और उन विशिष्ट योग्यताओं के आधार पर उनकी विशिष्ठता का स्तर का भी पहचान करे।
3. अध्यापक का यह कर्तव्य है कि वह उन छात्रों की पहचान करें जो अपंगता से ग्रसित है और उनके हिस्से व्यक्तिगत भिन्नता के आधार पर उनके स्तर का भी निर्धारण करें।
4. एक अध्यापक को यह चाहिए कि वह सुविधा से वंचित उन बालकों की पहचान करें।
5. एक अध्यापक को व्यक्तिगत भिन्नता को ध्यान में रखते हुए कक्षा में पाठ्यक्रम में विविधता का भी लाना अनिवार्य होता है।
6. अध्यापक की यह जिम्मेदारी है कि वह विद्यार्थियों के लिए भिन्न-भिन्न प्रकार के कार्यक्रमों और संस्थाओं का प्रावधान करें जिससे उनका विकास सही रूप में हो सके।
7. एक अध्यापक को हमेशा व्यक्तिगत रूप से अनुदेशन का भी प्रबंध करना चाहिए क्योंकि इस अनुदेशन से बालक की क्षमताओं का अधिकतम विकास होता है और शिक्षक और शिक्षा की प्रक्रिया भी सुचारू रूप से चलती है।
8. एक विद्यालय को व्यक्तिगत भिन्नता को ध्यान में रखते हुए सुयोग्य शिक्षकों की भी व्यवस्था करनी चाहिए तथा साथ में समुचित सुविधाओं और उपकरणों का भी प्रबंध करना चाहिए जिससे व्यक्तिगत भिन्नता से प्रभावित विद्यार्थियों को उचित शिक्षा प्रदान कर सके।

निष्कर्ष:

व्यक्तिगत भिन्नता आज के समय का एक ऐसा विषय बन गया है इस पर भारतीय मनोविज्ञान से लेकर पश्चात मनोविज्ञान ने अपनी-अपनी विचारधाराए प्रस्तुत की जहां भारतीय मनोविज्ञान की दृष्टि है।

संदर्भ:

1. अग्निहोत्री, प्रो, शिक्षा की भारतीय अवधारणा, आदर्श और प्रयोग, एनसीईआरटी, नई दिल्ली
2. आलपोर्ट, एफ.एच., सोशल साइकोलॉजी, बोस्टन : हाफटन मिफ्टिन, 1924
3. ओड, एल. के. (1983), शिक्षा के दार्शनिक पृष्ठभूमि, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर।
4. पांडेय कल्पलता और श्रीवास्तव, शंकर शरण, 2007, शिक्षा मनोविज्ञान (भारतीय और पाश्चात्य दृष्टि), टाटा मैकग्रा हील पब्लिशिंग हाउस कंपनी लिमिटेड, न्यू दिल्ली।
5. गुप्ता, एस.पी. और अलका गुप्ता (2009), उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, शारदा पुस्तक भवन, प्रयागराज।